शङ्कर-रत्नमालिका

वादतोषितविश्वेशं धर्ममार्ग प्रवर्त्तकम्
वन्दे हरिहरानन्दं करपात्रं जगद्गुरुम् ।

अनुवादक :
डॉ० अर्जुन तिवारी

सहयोग राशि १.२५ रु०

समर्पण

श्रीशङ्कराचार्यस्वरूप पूज्यं
करपात्रि-शिष्यं मुनिमात्मबोधम् ।
सनातने वर्त्मनि वर्त्तमानं
वन्दे तु वेदान्तिगुरुं सरस्वतीम् ।।

—अर्जुन तिवारी

शङ्कर-रत्नमालिका

(श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य विरचित प्रश्नोत्तरी का पद्यानुवाद)

अनुवादः

डॉ० अर्जुन तिवारी

पत्रकार

प्रकाशक

श्री वेदान्ती स्वामी जी

धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड

वाराणसी

अनुवाक्

शिवावतार आदिशंकराचार्य का दिव्य जीवन सनातन वैदिक धर्म का दिग्दर्शनकारी प्रकाश-स्तम्भ है। अगाध पाण्डित्य, असाधारण शास्त्र, व्याख्यान-कौशल और अद्भुत मेधा के बल पर उन्होंने विकृत बौद्धों के आघात से विध्वस्त एवं हतप्रभ हिन्दू धर्म को नव-जीवन प्रदान किया। मानव के समक्ष कहाँ, किधर, क्यों और कैसे इन प्रश्नों की सुमधुर और प्रभावकारी व्याख्या प्रस्तुत करना ही आचार्य जी के दर्शन का लक्ष्य है ताकि अज्ञानता की समाप्ति हो। संसार को दुःख, सुख, भाग्य, मोहादि से विमुक्त कराना ही सद्धर्म है इसीलिए आदि शंकराचार्य ने जीव-जगत, माया और ब्रह्म सम्बन्धी सभी जिज्ञासाओं का उत्तर ललित, सारगर्भित एवं बोधगम्य शैली में प्रस्तुत किया है। वास्तव में कवित्व और दर्शन के समन्वय का अनुपम उदाहरण ही 'शंकर रत्नमालिका' है जो उदात्त भावों की सशक्त संवाहिका है।

पत्रकारोचित जिज्ञासा के कारण मैं जगद्गुरु शंकराचार्य की 'प्रश्नोत्तरी' के प्रति आकृष्ट हुआ जिसका प्रत्येक शब्द मुझे मंत्र दीख पड़ा। अतः यह अनुवाद प्रस्तुत है।

नारियों से निवेदन

नारी सम्बन्धी कुछ उक्तियाँ कर्ण-कटु प्रतीत हो सकती हैं जिससे दिग्भ्रमित नहीं होना चाहिए। शंकराचार्य के समय—

'मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च,

एते पंचमकराः स्यु मोक्षदा हि युगे युगे।—का बोलबाला था। उससमय नारियों की नग्न मूर्तियों, सहवास की अश्लील मुद्राओं

द्वारा वासना को उद्दीप्त कराया जाता था। सिद्धि के लिए स्त्री (शक्ति) का योग (शारीरिक सम्बन्ध) आवश्यक माना गया। दुराचार की इस चरम स्थिति से क्षुब्ध होकर वासना पंकिल समाज को आचार्य जी ने कड़ुवी औषधि दी। ऐसे तो वे नारियों को पूज्या देवी मानते थे। उनकी मातृ-भक्ति तो अप्रतिम है। धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी के संकेत एवं स्वामी सदानन्द सरस्वती (श्री स्वामी वेदान्ती जी) के आदेशानुसार अनूदित यह लघुकाय प्रश्नोत्तरी यदि अच्छी लगे तो इन्हीं विभूतियों की अलौकिक कृपा समझनी होगी। डॉ रामायण उपाध्याय प्राचार्य; म० मो० मा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भाटपार रानी, आचार्य विश्वरूप त्रिपाठी, सरस शिक्षक पं० महावीर त्रिपाठी, तथा श्री विजयानन्द पाण्डेय जी का सहयोग एवं सुझाव मेरा सम्बल रहा है। यथार्थ को परखने की दिशा में, यह लघु प्रयास सफल हो, यही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है।

डॉ० अर्जुन तिवारी
पत्रकार

शिव-सदन
भाटपार रानी, देवरिया

अपारसंसारसमुद्रमध्ये,
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपयावदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ॥ १ ॥

बद्धो हि को यो विषयानुरागी,
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ।
को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः,
तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति ॥ २ ॥
संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः,
को मोक्षहेतुः कथितः स एव ।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी,
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ॥ ३ ॥
शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो,
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी ।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि,
तान्येव मित्राणि जितानि यानि ॥ ४ ॥

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः,
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः ।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः,
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा ॥ ५ ॥

भव सागर में डूब रहे हम,
गुरुवर बोले कौन सहारा ?
प्रभु पद-पद्म सुदीर्घ नाव ही
आश्रय है, जग-खेवनहारा ॥ १ ॥

बँधा कौन ? जो भोग लिप्त है,
क्या है मुक्ति ? विरक्ति भाव है।
घोर नरक क्या ? अपना ही तन,
क्या है स्वर्ग ? वितृष्ण-भाव है ॥ २ ॥

विश्व-विजेता, मुक्त कौन है ?
वेदोत्पन्न ज्ञान अधिकारी।
स्वर्गप्रद क्या ? दया अहिंसा
नरक कुण्ड क्या ? केवल नारी ॥ ३ ॥

किसे नींद-सुख ? ध्यान मग्न को
जगते कौन ? विवेकी नर ही।
कौन शत्रु ? इन्द्रियां स्वयं की
संयम हो तो मित्र प्रवर ही ॥ ४ ॥

दरिद्रता क्या ? परम लोभ है
धनी कौन ? संतोष-रहित जो।
जीवित शव क्या ? निरूद्यमी नर
सुखी कौन है ? आश रहित जो ॥ ५ ॥

पाशो हि को यो ममताभिमानः,
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री ।
को वा महान्धो मदनातुरो यो,
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् ॥ ६ ॥

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा,
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्तः एव ।
को दीर्घरोगो भव एव साधो,
किमौषधं तस्य विचार एव ॥ ७ ॥

किं भूषणाद् भूषणमस्ति शीलं,
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम् ।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता,
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ॥ ८ ॥

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति,
सत्संगतिर्दानविचारतोषाः ।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा,
अपास्तमोहाः शिवतत्वनिष्ठाः ॥ ९॥

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता,
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः ।
कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः,
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ॥ १० ॥

बंधन क्या ? ममता घमंड ही
मोहे कौन ? सुरा-सम नारी ।
कौन महा अंधा ? कामी नर
क्या है मौत ? अयश ही भारी ॥ ६ ॥

गुरु कौन जो हित उपदेशक
कौन शिष्य ? जो रत गुरु अर्चन ।
महा रोग क्या ? भव-सागर ही
औषधि क्या ? सब तत्व-विचिंतन ॥ ७ ॥

भूषण क्या ? उत्तम स्वभाव ही
तीर्थ कौन ? मानस पावन है ।
हेय यहाँ क्या ? कनक-कामिनी
श्रव्य कौन ? गुरु-वेद-वचन है ॥ ८ ॥

ब्रह्म-प्राप्ति-साधन बतलावें
दान, ध्यान, सत्संगति-नाता ।
संत कौन ? जो राग त्याग कर
मोह शून्य हो शिव-पथ-ध्याता ॥ ९ ॥

जीव-ज्वर क्या ? चिन्ता ही बस
मूर्ख कौन ? जो ज्ञानहीन है ।
प्रेय कार्य क्या ? ईश-भजन है
जीवन शुभ क्या ? दोषहीन है ॥ १० ॥

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या,
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः ।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै,
जितं जगत्केन मनो हि येन ॥ ११ ॥

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा,
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा,
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ॥ १२ ॥

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता,
दुःखी सदा को विषयानुरागी ।
धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी,
कः पूजनीयः शिवतत्वनिष्ठः ॥ १३ ॥

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं,
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात् ।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं,
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता ॥ १४ ॥

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा,
नार्या पिशाच्या न च वञ्चितोयः ।
का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी,
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम् ॥ १५ ॥

विद्या क्या ? प्रभु-पद-प्रदायिनी
बोध कौन ? है मुक्ति हेतु जो ।
क्या सुलाभ ? बस ब्रह्म प्राप्ति ही
कौन विश्व-जित् ? मन-विजयी जो ॥ ११ ॥

वीरों में अति वीर कौन है ?
काम बाण किसको न सताता ।
कौन धीर प्रज्ञाशाली है ?
रमणी-चितवन घात न खाता ॥ १२ ॥

घातक विष क्या ? विषय भोग ही
दुखी कौन ? वासना-निरत जो ।
पूज्य कौन ? शिव-पद-अनुरागी
कौन धन्य है ? परहित-रज जो ॥ १३ ॥

ज्ञानी हित वर्जित विधेय क्या ?
जग से राग, पाप ही जानो ।
पढ़े ग्रंथ फिर चले धर्म पर
जगत-मूल क्या ? चिंता मानो ॥ १४ ॥

कौन महाज्ञानी है जग में ?
ठगे न जिसे पिशाचिन नारी ।
वही जीव की बेड़ी बनती
व्रत क्या ? विनय-भाव सुखकारी ॥ १५ ॥

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वैं,
योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम् ।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा,
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा ॥ १६ ॥

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो,
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः ।
मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं,
सत्संगतिर्निर्ममतेशभक्तिः ॥ १७ ॥

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव,
गुरुत्वमूलं यदयाचनं च ।
जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म,
को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः ॥ १८ ॥

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा,
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः ।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं,
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी ॥ १९ ॥

तत्वं किमेकं शिवमद्वितीयं,
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति ।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्यग्,
देयं परं किं त्वभयं सदैव ॥ २० ॥

जान नहीं पाते सब क्या क्या ?
नारी-मन की बात, चरित्त को।
क्या दुस्त्याज्य ? व्यर्थ की आशा
कहें किन्हें पशु ? ज्ञान रहित को ॥ १६ ॥

किसके साथ न रहना समुचित ?
मूढ़, नीच, खल, पापी के संग।
शीघ्र करे क्या मोक्ष-लाभ हित ?
ममता-त्याग, भक्ति-सज्जन संग ॥ १७ ॥

लघुता क्या ? सर्वत्र मांगना
प्रभुता क्या ? न याचना करना।
जन्म सफल कब ? पुनः न जनमे
सुफल मृत्यु क्या ? पुनः न मरना ॥ १८ ॥

गूंगा बहरा किसको जाने ?
सम्यक् कहे न सत्य सुने जो।
किस पर नहीं भरोसा करना ?
नारी कोई बात कहे जो ॥ १९ ॥

अनुपम तत्व कहाँ ? शिव में ही
उत्तम क्या ? सच्चरित जानिए।
त्याज्य कौन सुख ? रमणी-लिप्सा
परम देय क्या ? अभय मानिए ॥ २० ॥

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा,
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः ।
न पूर्यते को विषयैः स एव,
किं दुःखमूलं ममताभिधानम् ।। २१ ।।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य,
सत्यं च किं भूतहितं सदैव ।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं,
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ।। २२ ।।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः,
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव,
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः ।। २३ ।।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते,
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात् ।
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं,
मुरारिपादाम्बुजचिन्तन च ।। २४ ।।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः,
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।
मातेव का या सुखदा सुविद्या,
किमेधते दानवशात्सुविद्या ।। २५ ।।

सबसे बड़ा शत्रु बतलाओ
कोप लोभ युत काम वही है।
विषय भोग से तुष्टि न उसकी
दुःख मूल क्या ? महा मोह है ।। २१ ।।

मुख-भूषण क्या ? साक्षरता है
क्या है सत्य ? जीव-हित-साधन ।
करके काम न पछताना कब ?
विधिवत् हरि-हर अर्चन-बंदन ।। २२ ।।

कहाँ नहीं भय ? मात्र मुक्ति में
मुक्ति सुलभ कब ? मरता जब मन ।
चुभती क्या ? मूढ़ता स्वयं की
पूज्य कौन ? गुरु, देव, वृद्धजन ।। २३ ।।

प्राण-हरण को यम यदि आवें
कार्य कौन सा तब विधेय है ?
तन-मन-वचन सभी उपाय से
यम-भय-हारी कृष्ण गेय हैं ।। २४ ।।

कौन दस्यु ? तन विषय-वासना
माँ सम सुखदायी क्या ? विद्या ।
शोभा किसकी ? सभा-सुधी की
बढ़े दान से क्या ? सत् विद्या ।। २५ ।।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया,
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा,
विपत्सहायः परिपालिका ये ॥ २६ ॥

बुद्धा न बोध्यं परिशिष्यते किं,
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सीवत्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे ॥ २७ ॥

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके,
सत्संगतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः,
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ॥ २८ ॥

पशोः पशुः को न करोति धर्मं,
प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः ।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री,
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः ॥ २९ ॥

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु,
दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम् ।
कण्ठंग तैरप्यसुभिर्न कार्यं,
किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा ॥ ३०॥

जग-जंगल, लोकापवाद से
प्रतिपल भय अभीष्ट है मानो ।
बन्धु कौन ? जो विपति-सहायक
कौन पिता ? परिपालक जानो ।।२६।।

शेष न बचता किसको पाकर
सुखदायक शंकर प्रसाद ही ।
जगत-सुपरिचित कब होता है ?
पूर्ण ब्रह्म सम्प्राप्ति बाद ही ।।२७।।

दुर्लभ क्या ? सद्गुरु, सत्संगति
ब्रह्म-विचार, त्याग, शिव-चिंतन ।
दुर्जय क्या है ? सभी जनों से
कामदेव का मोहक चितवन ।।२८।।

कौन चतुष्पद ? धर्म रहित जो
हो पंडित पर बोध न पाता ।
सुधा समान गरल क्या ? रमणी
अरि सम सुहृद कौन ? कुल-नाता ।।२९।।

उच्च दान क्या ? पात्र दत्त ही
तड़ित वेग सम क्या ? घन-यौवन ।
अन्त समय वर्जित, विधेय क्या ?
पापाचार, शिवार्चन-वंदन ।।३०।।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं,
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः,
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ ॥ ३१ ॥

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा,
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।
तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं,
रमेशगौरीशकथेव सद्यः ॥ ३२ ॥

राष्ट्रवाणी

दिवस-रात्रि हर पल सुचिन्त्य क्या ?
जगत झूठ, शिव-तत्व सत्य है।
कर्म कौन ? प्रभु प्रमुदित जिससे
भव सागर-आस्था असत्य है ॥३१॥

करें पाठ या सुनें सर्वदा
प्रश्नोत्तर नामक मणिमाला ।
कमलापति-शिव-कथा सदृश ही
पायेंगे सुख सदा निराला ॥३२॥

❖

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो।
प्राणियो में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो ॥

हर-हर महादेव ।

डा अर्जुन तिवारी पत्रकार के द्वारा विरचित आदिशङ्कराचार्य की 'प्रश्नोत्तरी' का 'शङ्कर रत्नमालिका' के नाम से हिन्दी अनुवाद के पद्यों को सुनकर चित्त में बड़ी प्रसन्नता हुई। अनुवाद बड़ा ही सरस, सुबोध तथा सुखद है। मूल संस्कृत का भाव हिन्दी में पूर्णतया सुरक्षित रखा गया है। ऐसे रोचक तथा हृदयावर्जक पद्यानुवाद के लिए मैं तिवारी जी का बड़ा आभार मानता हूँ। आशा करता हूँ कि ऐसे ही सुन्दर अनुवादों को प्रस्तुत कर वे धार्मिक जगत् का उपकार सम्पादन करेंगे।

बलदेव उपाध्याय
विद्या विलास
३७ बी. रविन्द्रपुरी
वाराणसी।

२३-१-८४

डॉ० अर्जुन तिवारी कृत रत्न-मालिका

अगाध पाण्डित्ययुता सुपुस्तिका, श्री शंकराचार्य विनिर्मिता जो;
माया जगत् ब्रह्म सुवर्म भाषिका विद्वज्जनों के जो सदा सुसेव्य है।
सद् भावयित्री नित चिन्तनीया भाषानुवाद ललिता सरला सुबोधा;
महामना राघव के सुधीश्री अर्जुन तिवारी कृत 'रत्न मालिका'॥'

कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र'
बाबा राघवदास कृषक कालेज,
भाटपार रानी, देवरिया (उत्तर प्रदेश)

पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी के ग्रन्थ

वेदार्थपारिजात —१८०) रामायण मीमांसा ६०)

मार्क्सवाद और राम-राज्य ३५) विचार पीयूष २२)

भक्ति सुधा ४५) संकीर्तन मीमांसा एवं वर्णाश्रम धर्म २)५०

वेद का स्वरूप और प्रामाण्य (२ भाग) ७)५०

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू धर्म ५) दशनामापराध २)

पूंजीवाद, समाजवाद और राम-राज्य ७) संघर्ष और शान्ति ५)

क्या सम्भोग से समाधि ३) राहुल जी की भ्रान्ति.५)

तिथ्यादिनिर्णयः कुम्भ निर्णयश्च २) धर्म और राजनीति १)

संक्षिप्त परिचय १)५० अहमर्थ और परमार्थसार ६)

ईश्वर साध्य एवं साधन १) वेदान्त प्रश्नोत्तरी ५)

विभीषण शरणागति ३) श्री करपात्री एक अध्ययन २०)

श्री स्वामी करपात्रिगौरव ५०) बदलती दुनिया ३)

संस्कृत ग्रन्थ

श्रीविद्यारत्नाकर ३०) चतुर्वर्ण्यसंस्कृतिविमर्शः २ भाग २०)

श्री विद्यावरिश्या—८.०० भक्तिरसार्णव ५)

वेदस्वरूपविमर्शः ७) वेदप्रामाण्यमीमांसा २)

प्रकाशक—श्री वेदान्ती स्वामी जी, धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी।

मुद्रक—मधुसूदन प्रेस, भदैनी, वाराणसी